वृंदावन का कृष्ण कन्हैया

वृंदावन का कृष्ण कन्हैया सबकी आंखों का तारा ।
मन ही मन क्यों जले राधिका मोहन तो है प्यारा ॥

यमुना तट पर नंद का लाला जब जब रास रचाय रे ।
तन मन डोले कान्हा ऐसी वंशी मधुर बजाए रे ।
सुध बुध भूली खड़ी गोपियां जाने कैसा जादू डारा ॥

रंग सलोना ऐसा जैसे छाई हो घट सावन की ।
ऐरी सखी मैं हुई दिवानी मनमोहन मनभावन की ।
तेरे कारण देख सावरे छोड़ दिया मैंने जग सारा ॥

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/7131/title/vrindhavan-ka-krishan-kanhiyan-sabki-aankho-kaa-taara

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |